'युवार्थ' से प्रत्येक छात्र को लेना चाहिए प्रेरणा : कुलपति

पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला के छात्र की पुस्तक का विमोचन

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला के छात्र नितिन द्वारा राष्ट्रीय विचारधारा पर लिखी गई पुस्तक 'युवार्थ' का विमोचन कुलपति प्रो. रेणु जैन ने भालेदा परिसर में किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मीडिया भवन की विभागाध्यक्ष डॉ. सोनाली नरगुंदे ने की। कुलपति का स्वागत छिंदवाड़ा निवासी मोहन डेहरिया ने किया।

कुलपति ने पुस्तक की शुरुआत की ही दो पंक्तियों को पढ़कर सभी छात्रों को युवार्थ से प्रेरणा लेने की बात कही। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक युवाओं का मार्गदर्शन करेगी, क्योंकि यह एक अनुभव व संघर्ष से निर्मित पुस्तक है। डॉ. सोनाली नरगुंदे ने उपस्थित सभी छात्रों व अतिथियों को समाज में साहित्य से जुड़े तथ्यों से अवगत कराते हुए आने वाले समय में साहित्य के क्षेत्र में प्रयास करने वाले छात्रों को सभी जरूरी संसाधन उपलब्ध कराए जाने के प्रयास को साझा किया। साथ ही बताया कि हम हर महीने किसी एक विषय में एक प्रयोग करते हैं, वह प्रयोग छात्रों द्वारा ही किसी एक विषय को चुनकर लिखा जाता है, जो पत्रकारिता के छात्रों को प्रगति की ओर बढ़ने के लिए एक उचित मार्गदर्शन होता है।

नितिन पिछले छह वर्ष से विश्वविद्यालय में संगठनात्मक तौर पर कुशल छात्र नेता की छवि में कार्य करते रहे हैं, जो विचारधारा पर आधारित सबसे कम उम्र में पुस्तक लिखने वाले हैं। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के छात्र एवं कल्याण विभाग प्रमुख डॉ. एलके त्रिपाठी, मीडिया भवन शिक्षकगण के साथ पत्रकारिता विभाग के शोधकर्ता उपस्थित थे।

पुस्तक युवार्थ का विमोचन करतीं कुलपति डॉ. रेणु जैन। ● नईदुनिया

विवि में द्विभाषी डिग्री का काम शुरू, पहले दिन कुलपति ने छह पर किए दस्तखत

दौर। नईदुनिया प्रतिनिधि

देशभर में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय कोर्स पूरा करने वाले विद्यार्थियों को हली बार द्विभाषी (बायलैंगुअल) डिग्रियां मिलने जा रही हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन ने डिग्रियां बांटने का काम शुरू कर दिया है। गुरुवार को पहले दिन कुलपति डॉ. रेणु जैन ने छह विद्यार्थियों की डिग्री पर दस्तखत किए। द्विभाषी डिग्री की खासियत यह है कि इसकी नकल होना बेहद मुश्किल है। यहां तक कि सुरक्षा की दृष्टि से कई फीचर इसमें जोड़े गए हैं। अधिकारियों के मुताबिक 16 अक्टूबर से नई डिग्री के लिए फॉर्म दिए जा रहे हैं। डिग्रियों की नकल, कटने-फटने और जलने जैसी समस्या को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय ने डिग्री का प्रारूप बदला है। विशेष कागज से बनी डिग्री पर हिंदी और अंग्रेजी में लिखा होगा। द्विभाषी डिग्री का शुल्क भी महज 300 रुपए रखा है। जबकि पुराने फॉर्मेट वाली डिग्रियों में हिंदी और अंग्रेजी के लिए 400 रुपए विद्यार्थियों को देने पड़ते हैं। सुरक्षा के लिए क्यूआर कोड, वाटरमार्क, विशेष तरह के फंट बनाए हैं। माना जा रहा है कि इनकी नकल होना मुश्किल है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने डिग्री का काम मुंबई की एजेंसी को दिया है। नई डिग्री के लिए 16 अक्टूबर से फॉर्म भरवाए जा रहे हैं, ताकि नवंबर से प्रत्येक विद्यार्थी को यह डिग्री दी जा सके। गुरुवार को कुछ डिग्रियां प्रिंट करवाकर बुलाई। जहां कुलपति डॉ. जैन ने उन पर दस्तखत कर विद्यार्थियों को जारी कर दी। डिप्टी रजिस्ट्रार प्रज्ज्वल खरे ने बताया कि सांकेतिक तौर पर अभी डिग्रियां दी हैं। नवंबर से प्रत्येक विद्यार्थियों को डिग्रियां बांटी जाएंगी।

नवंबर से प्रत्येक विद्यार्थी को दी जाएंगी डिग्रियां

सैकड़ों पुरानी डिग्रियां हैं बाकी: 15 अक्टूबर तक आवेदन करने पर विश्वविद्यालय पुरानी डिग्रियां विद्यार्थियों को देगा। माना जा रहा है कि अभी सैकड़ों बांटना बाकी है। अधिकारियों के मुताबिक लगभग पुराना स्टॉक निकालने में 10-15 दिन लग सकते हैं। करीब दो हजार से ज्यादा पुरानी डिग्रियां बांटी जाना है।

यूजीसी का फरमान

वार्षिक उत्सव सहित हर कार्यक्रम में शिक्षक-कर्मचारी पहनें खादी

कपिल नीले
इंदौर। नईदुनिया

खादी और हथकरघा यानी हैंडलूम को बढ़ावा देने के लिए अब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने शैक्षणिक संस्थानों के कार्यक्रमों के लिए वेशभूषा तय कर दी है। यूजीसी ने विश्वविद्यालय को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि दीक्षांत समारोह, वार्षिक उत्सव समेत प्रत्येक कार्यक्रम में शिक्षक और कर्मचारी खादी से बने परिधान ही पहनें। विश्वविद्यालय को कॉलेजों में इसे अनिवार्य करने की जिम्मेदारी दी है।

अधिकारियों की मानें तो इससे भारतीय संस्कृति का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जाएगा। खास यह है कि देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में पिछले दो बार से दीक्षांत समारोह में खादी से बने वस्त्र ही पहने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खादी के उपयोग और हथकरघा के पुनरुद्धार पर जोर दे रहे हैं जिससे इस क्षेत्र में काम करने वालों को आजीविका के अवसर दिए जा सकें। साथ ही भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया जा सके। इसी क्रम में यूजीसी ने 21 अक्टूबर को पत्र निकालकर निर्देश दिए कि दीक्षांत समारोह समेत अन्य कार्यक्रम (वार्षिक उत्सव, स्थापना दिवस, सम्मान समारोह) में भारतीय वेशभूषा पहनने की सलाह दी है। यूजीसी ने कुलपति को विश्वविद्यालय से संबद्धता प्राप्त लगभग 280 कॉलेज हैं। अधिकारियों का कहना है कि जल्द ही कॉलेज प्रबंधन को पत्र जारी कर यूजीसी के निर्देशों का पालन करने को कहेंगे। आयोग के सचिव डॉ. रजनीश जैन का कहना है कि खादी और हथकरघा वाले कपड़ों से भारतीय संस्कृति व पहनावे को बढ़ावा मिलेगा। बुनकरों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। मामले में डीएवीवी की कुलपति डॉ. रेणु जैन ने बताया कि वे भी खादी के वस्त्रों का समर्थन करती हैं। यूजीसी के निर्देश के बाद प्रत्येक कार्यक्रम में स्टाफ को यह परिधान ही पहनने के लिए बोलेंगे।

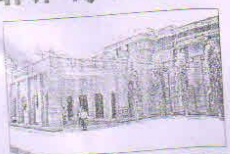

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय। ● फाइल फोटो

यूजीसी ने कॉलेजों के कार्यक्रमों के लिए भी वेशभूषा तय करने को कहा